

24. गुरु-पूर्णमा

—आचार्य जयराम शर्मा

गुरु का शाब्दिक अर्थ है बड़ा अथवा महान्। गुरु का बहुत ऊँचा स्थान है। भारत देश में गुरु महिमा का आदिकाल से अनवरत गौरव गान किया जाता रहा है। यही नहीं गुरु शिष्य परम्परा की स्थापना की दृष्टि से भी भारत का योगदान स्मरणीय है। गुरु शिष्य परम्परा और गुरुकुल शिक्षा की दृष्टि से भारतवर्ष ने सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया है। गुरु जिज्ञासु शिष्य के संशयों और भ्रमों का तर्कपूर्ण ढंग से निवारण करने में समर्थ होता है। सद्गुरु की प्राप्ति से शिष्य के संशय रूपी अंधकार का नाश हो जाता है। अस्तु-देवता स्वरूप गुरु के चरण-कमल वन्दनीय हैं। कदाचित् इसी कारण गुरु की पदवी साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी ऊँची मानी गयी है। कहा भी गया है :-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

हमारे देश में मनाए जाने वाले सभी पर्वोत्सव राष्ट्र की एकता तथा भौतिक व आध्यात्मिक समृद्धि के सूचक हैं। अपने गहन आध्यात्मिक चिन्तन के परिणामस्वरूप ही भारत को विश्व-गुरु होने का गौरव प्राप्त है। गुरु-शिष्य परम्परा ने ही श्रुतियों और स्मृतियों के प्राचीन ज्ञान को अब तक सुरक्षित रखा है। गुरु पूर्णिमा को सारे भारत में मनाया जाता है। महाभारत के रचनाकार महर्षि वेद व्यास ने अनेक ग्रन्थों की रचना करके मानव जाति का मार्गदर्शन किया था। इसीलिए व्यास जी जगद्गुरु के पद पर आसीन हैं अतः गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है।

सूर्य और चन्द्र केवल बाहरी अंधकार को ही दूर करते हैं, जबकि गुरु मनुष्य के आन्तरिक अज्ञान रूपी अन्धकार को ज्ञानरूपी प्रकाश से नष्ट कर देता है। गुरु ही मनुष्य को असत् से सत् एवं अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। इस संसार में ज्ञान से महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है। बिना ज्ञान के जगत् में मुक्ति प्राप्त नहीं होती। गुरु सदैव अपने शिष्यों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जैसे दीपक से दीपक ज्योतिष होकर विश्व में प्रकाश फैलता है, ठीक उसी प्रकार गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान उसके शिष्यों-प्रशिष्यों के माध्यम से अजर-अमर हो जाता है।

हिन्दी साहित्य के सन्त कवियों ने गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति असम्भव मानी है। महात्मा कबीर तो गुरु को गोविन्द से भी श्रेष्ठ मानते हैं—यथा—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े का के लागौ पाय।

बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय॥

सद्गुरु का सान्निध्य शिष्यों को उच्च विचारों द्वारा भौतिकता से ऊपर उठाकर विश्व बन्धुत्व और समभाव की भावना से मण्डित कर देता है।

गुरु पूर्णिमा का दिन शिष्यों के लिए गुरु वन्दना और गुरु पूजा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस दिन शिष्य श्रद्धा से अपने आचार्य अथवा गुरु का विधिपूर्वक पूजन करते हैं। चरण प्रक्षालन करके अक्षत, चन्दन, पुष्प और धूप दीपादि से अपने आराध्य गुरु को प्रसन्न करते हैं। कन्न और दक्षिणा देने का भी विधान है। तत्पश्चात् शिष्य गुरु के श्रीचरणों में विनम्रतापूर्वक प्रणाम करके गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करता है। गुरु पूर्णिमा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि ज्ञानवानों और बड़ों का आदर करना चाहिए। यही नहीं, अपने साथ किए गए सद्भाव के लिए हमें हमेशा दूसरों का कृतज्ञ रहना चाहिए। महात्मा कबीर ने गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा है-

धरती सब कागद कहूँ, लेखनि सब बन राय।

सात समद की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय॥

अर्थात् गुरु की महिमा अनन्त है।

गुरु वह है जो अपने शिष्य का सभी प्रकार से हित करता है। शिष्य वह है जो गुरु का भक्त हो तथा न ही गुरु की निन्दा करे और न ही सुने। हमारे शास्त्रों में गुरु निन्दा को अनुचित माना गया है। गुरु का हृदय शिष्य के प्रति करुणा और प्रेम से भरा होता है इसीलिए वह अपना सारा ज्ञान शिष्य को देना चाहता है। महर्षि वशिष्ठ, वेद व्यास, श्री कृष्ण, चाणक्य, गुरु नानक देव तथा समर्थ गुरु रामदास आदि का नाम गुरु परम्परा में बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु में आषाढ़ मास में आती है। इन दिनों जलपूरित मेघ प्यासी धरती को आप्लावित कर देते हैं। इसी प्रकार आषाढ़ मास में गुरु पूर्णिमा के दिन अपने ज्ञान पिपासु शिष्यों को गुरु भी ज्ञानरूपी वर्षा से आनन्दित कर देता है।

हिन्दी के कवि डॉ० पीयूष गुलेरी ने गुरु महिमा का वर्णन करते हुए यों लिखा है :-

साक्षात् ब्रह्म गुरु तपः शूर, बिगलित होता लख काल क्रूर।

अज्ञान तिमिर हिलता समूल, हो जाता क्षण में चूर-चूर।

उज्ज्वल ललाट वह तपःपूत, कल्याणकारी वह शान्तिदूत।

कर देता जग-तम टूक-टूक, साकार ब्रह्म गुरु का स्वरूप।

रख विमल भाव मन में उतार, सश्रद्ध विनत बन निर्विकार।

शुभ दिवस सुमंगल पर्वसाल, कर नमन सुगुरु को बार-बार॥

* अभ्यास *

1. मनुष्य के जीवन में गुरुओं का क्या महत्व है ?
2. गुरु पूर्णिमा कब और कैसे मनाई जाती है ?
3. हिन्दी के कवि कबीरदास ने गुरु को भगवान् से भी बड़ा क्यों माना है ?
4. महर्षि वेद व्यास ने किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की ?